B.A-II-(H)
PAPER-III

चिन्ता विकार
ANXIETY DISORDER.

चिन्ता वस्तुतः भय के कारण उत्पन्न होती है। सामान्य जीवन में होनेवाली किसी प्रकार की क्षति, कठिन एवं उलझनपूर्ण परिस्थितियों, आदर्श एवं प्रतिष्ठा की रक्षा, व्यक्ति के कल्याण तथा सुरक्षा में उत्पन्न बाधाओं की आशंका इत्यादि के कारण व्यक्ति स्वाभाविक रूप से भयभीत और चिन्तित हो जाता है। वर्तमान समय में मानव-जीवन का आधुनिकीकरण हो रहा है तथा उसके समक्ष अनेक प्रकार की उलझनें आ रही हैं, कोई भी व्यक्ति चिन्ता से मुक्त नहीं है। इस प्रकार, आधुनिक युग में मनुष्यों का चिन्तित होना सामान्य और स्वाभाविक है।

फिशर के अनुसार :— "सामान्य चिन्ता उन कठिनाइयों के प्रति की जानेवाली प्रतिक्रिया है जो व्यक्ति की पहुँच के बाहर होती है और जिनका परित्याग करने में व्यक्ति असमर्थ रहता है।

चिन्ता, मनोग्रस्तता एवं मनोविच्छेदी विकृति मनःस्ताप विकृतियों में आते हैं। यह एक ऐसी स्थिति होती है जो मस्तिष्क के आंगिक विकार के कारण से उत्पन्न नहीं होती है और न ही इसके विभ्रम या व्यामोह के लक्षण पाये जाते हैं।

वर्तमान समय में मनःस्ताप नाम का प्रयोग रोगों के वर्गीकरण में "मनःस्तापी प्रतिबल सम्बन्धित एवं देहरूपी विकार" समूह के एक भाग के रूप में किया जाता है। इन रोगों का वर्गीकरण (DSM-IV) तथा ICD-10 दोनों में ही किया गया है तथा दोनों ही वर्गीकरण लगभग —

समान हैं। इन दोनों में महत्वपूर्ण अन्तर यह है कि मनोग्रस्तता-बाध्यता को DSM-IV में चिन्ता विकार का प्रकार माना गया है, जब कि ICD-10 में इसे अलग से वर्गीकृत किया गया है। दूसरा अन्तर यह है कि DMS-IV में मनोविच्छेदी विकारों का प्रकार व्यक्तित्व लोप को माना गया है जब कि ICD-10 में इसे अलग से वर्गीकृत किया गया है।

चिन्ता मनोविकार एक ऐसी असामान्य स्थिति है जिसमें मुख्य रूप से चिन्ता के मानसिक एवं शारीरिक लक्षणों की प्रधानता होती है। किसी आंगिक मस्तिष्क विकार एवं अन्य मनोरोगों के कारण इन लक्षणों की उत्पत्ति नहीं होती DSM-IV में चिन्ता मनोविकार का तात्पर्य ऐसे विकार से है जिसमें रोगी को बिना कारण चिन्ता एवं बिना कारण डर की मात्रा इतनी अधिक होती है कि उसका सामान्य जीवन का व्यवहार प्रतिकूल हो जाता है। रोगी को व्यर्थ ही चिन्ता और डर इतना सताने लगता है कि वह सामान्य जीवन व्यतीत नहीं कर पाता है।

चिन्ता विकार का वर्गीकरण :- वर्तमान में मनोविकारों को वर्गीकृत करने के लिए दो व्यवस्थाएँ प्रचलित हैं- DSM-IV तथा ICD-10। दोनों व्यवस्थाओं में चिन्ता विकार निम्नानुसार वर्गीकृत किया है :-

ICD - 10 चिन्ता विकार	DSM - IV चिन्ता विकार
1. F40 भौतिक चिन्ता विकार एगोरा - फोबिया सामाजिक भीतियाँ विशिष्ट भीतियाँ	एगोरा फोबिया सामाजिक भीतियाँ विशिष्ट भीतियाँ
2. F41 अन्य चिन्ता विकार संत्रास विकार	संत्रास विकार - एगोराफोबिया के बिना
3. सामान्यीकृत चिन्ता विकार	सामान्यीकृत चिन्ता विकार.

संत्रास विकार :- चिन्ता विकार का संत्रास विकार एक प्रमुख प्रकार है। संत्रास विकार के निदान के मानक DSM - III (1989) से पहले तक उपलब्ध नहीं थे। संत्रास के दौरे में मनुष्य को मुख्य रूप से अचानक ही चिन्ता के दौरे पड़ने लगते हैं। इस दौरे में शारीरिक लक्षण अधिक होते हैं। ये दौरे इतने भयंकर होते हैं कि इसके साथ गम्भीर परिणाम का डर होता है।

Next day

Hrishi Kesh lal.
Deptt - Psychology.
B.M.C. Rahika.

Gestalt Perception

B.A-II-(11)
PAPER-IV

जैस्टाल्ट प्रत्यक्षीकरण

प्रत्यक्षीकरण के संबंध में विभिन्न वर्गों के वैज्ञानिकों ने भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से व्याख्या की है। यहाँ हम (I) जैस्टाल्टवादी मनोवैज्ञानिकों एवं (II) व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिकों के दृष्टिकोणों का वर्णन संक्षेप में करेंगे!—

(I) प्रत्यक्षीकरण का जैस्टाल्टवादी दृष्टिकोण :—
'जैस्टाल्ट' (Gestalt) एक जर्मन शब्द है, जिसका अंग्रेजी या हिंदी में शुद्ध अनुवाद संभव नहीं है। परंतु इस शब्द का उपयोग आकृति या शक्ल अथवा रूपरेखा आदि अर्थों में किया जाता है। परिभाषा के रूप में किसी वस्तु या उत्तेजक परिस्थिति की संपूर्णता में अनुभव-संबंधी विशेषताओं को जैस्टाल्ट की संज्ञा दी जा सकती है। जैस्टाल्टिज्म का जन्म वस्तुतः स्ट्रक्चरलिज्म के विरोध में हुआ है। स्ट्रक्चरलिज्म या स्ट्रक्चर स्कूल के मनोवैज्ञानिकों के अनुसार मानसिक प्रक्रियाएँ मानसिक तत्वों के योग से बनती हैं। जैस्टाल्टवादियों का मत है कि मानसिक प्रक्रियाएँ केवल मानसिक तत्वों का योगफल नहीं होती, बल्कि इनमें समग्रता का गुण पाया जाता है, जो मानसिक संगठन की क्रिया के फलस्वरूप होती है।

प्रत्यक्षीकरण के संबंध में जैस्टाल्टवादियों का मत है कि वातावरण में उपस्थित उत्तेजनाओं का प्रत्यक्ष बोध मस्तिष्क द्वारा वातावरण को संगठित करने पर निर्भर करता है न कि वातावरण से प्राप्त संवेदी विवरणों के योग पर

उदाहरण के लिए :– मान लें कि कोई व्यक्ति गाना सुन रहा है यदि उससे पूछा जाय कि वह क्या सुन रहा है तो वह संगीत या राग कहेगा अगर हम स्वरों को अलग-अलग करके सुनें तो संगीत का अनुभव नहीं होगा। अतः हम इस क्रिया को मस्तिष्क की सृजनात्मक क्रिया कह सकते हैं, जो प्राप्त हुए संवेदना को समग्र रूप से संगठित कर एक विशेष प्रकार के अर्थ का बोध कराती है।

(ii) व्यवहारवादी दृष्टिकोण :— व्यवहारवादियों का मत है कि प्रत्यक्षीकरण की क्रिया जन्मजात न होकर एक अर्जित अथवा सीखी गई क्रिया है। व्यवहारवादी वस्तुतः अनुभववादी हैं तथा पारसिमनी के नियम से प्रभावित हैं। अतः इनका दृष्टिकोण यह है कि जिन नियमों के आधार पर प्राणी में दूसरे व्यवहार उत्पन्न होते हैं, उन्हीं नियमों से प्रत्यक्षीकरण की भी उत्पत्ति होती है।

व्यवहारवादियों और गेस्टाल्टवादियों में कौन सही है यह कहना कठिन है लेकिन हेब, लैशले और रसेल आदि से प्राप्त प्रदत्तों के आधार यह कहा जा सकता है कि अंशतः दोनों विचार सही हैं।

Next day.

Harish Kesh lal
Deptt - Psychology
B.M.C. Rahika.